International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering, Technology & Management (IJMRSETM)

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 3, Issue 8, August 2016 |

सूरदास कृत काव्य में मातृत्व चित्रण

ज्योति कुमारी

सहायक आचार्य, हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़, अलवर

सार

सूरदास हिन्दी के भक्तिकाल के महान कवि थे। हिन्दी साहित्य में भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक और ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि महात्मा सूरदास हिन्दी साहित्य के सूर्य माने जाते हैं।[1] महाकवि श्री सूरदास का जन्म 1478 ई में रुनकता क्षेत्र में हुआ था| यह गाँव मथुरा-आगरा मार्ग के किनारे स्थित है। कुछ विद्वानों का मत है कि सूरदास का जन्म दिल्ली के पास सीही [2] नामक स्थान पर एक निर्धन सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। वह बहुत विद्वान थे, उनकी लोग आज भी चर्चा करते हैं। वे मथुरा के बीच गऊघाट पर आकर रहने लगे थे। सूरदास के पिता, रामदास बैरागी[3] प्रसिद्ध गायक थे। सूरदास के जन्मांध होने के विषय में अनेक भ्रान्तिया है, प्रारंभ में सूरदास आगरा के समीप गऊघाट पर रहते थे। वहीं उनकी भेंट श्री वल्लभाचार्य से हुई और वे उनके शिष्य बन गए। वल्लभाचार्य ने उनको पुष्टिमार्ग में दीक्षित कर के कृष्णलीला के पद गाने का आदेश दिया। सूरदास की मृत्यु गोवर्धन के निकट पारसौली ग्राम में 1583 ईस्वी में हुई। [4] सूरदास की जन्मतिथि एवं जन्मस्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद है। "साहित्य लहरी' सूर की लिखी रचना मानी जाती है। इसमें साहित्य लहरी के रचना-काल के सम्बन्ध में निम्न पद मिलता है -

मुनि पुनि के रस लेख।
दसन गौरीनन्द को लिखि सुवल संवत् पेख॥

इसका अर्थ संवत् 1607 ईस्वी में माना गया है, अतएव "साहित्य लहरी' का रचना काल संवत् 1607 वि० है। इस ग्रन्थ से यह भी प्रमाण मिलता है कि सूर के गुरु श्री वल्लभाचार्य थे।

सूरदास का जन्म सं० 1540 ईस्वी के लगभग ठहरता है, क्योंकि वल्लभ सम्प्रदाय में ऐसी मान्यता है कि बल्लभाचार्य सूरदास से दस दिन बड़े थे और बल्लभाचार्य का जन्म उक्त संवत् की वैशाख् कृष्ण एकादशी को हुआ था। इसलिए सूरदास की जन्म-तिथि वैशाख शुक्ला पंचमी, संवत् 1535 वि० समीचीन जान पड़ती है। अनेक प्रमाणों के आधार पर उनका मृत्यु संवत् 1620 से 1648 ईस्वी के मध्य स्वीकार किया जाता है। रामचन्द्र शुक्ल जी के मतानुसार सूरदास का जन्म संवत् 1540 वि० के सन्निकट और मृत्यु संवत् 1620 ईस्वी के आसपास माना जाता है।

श्री गुरु बल्लभ तत्त्व सुनायो लीला भेद बतायो।

सूरदास की आयु "सूरसारावली' के अनुसार उस समय 67 वर्ष थी। 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के आधार पर उनका जन्म रुनकता अथवा रेणु का क्षेत्र (वर्तमान जिला आगरान्तर्गत) में हुआ था। मथुरा और आगरा के बीच गऊघाट पर ये निवास करते थे। बल्लभाचार्य से इनकी भेंट वहीं पर हुई थी। "भावप्रकाश' में सूर का जन्म स्थान सीही नामक ग्राम बताया गया है। वे सारस्वत ब्राह्मण थे और जन्म के अंधे थे। "आइने अकबरी' में (संवत् 1653 ईस्वी) तथा "मुतखबुत-तवारीख" के अनुसार सूरदास को अकबर के दरबारी संगीतज्ञों में माना है।

परिचय

सूरदास श्रीनाथ की "संस्कृतवार्ता मणिपाला", श्री हरिराय कृत "भाव-प्रकाश", श्री गोकुलनाथ की "निजवार्ता" आदि ग्रंथों के आधार पर, जन्म के अन्धे माने गए हैं। लेकिन राधा-कृष्ण के रूप सौन्दर्य का सजीव चित्रण, नाना रंगों का वर्णन, सूक्ष्म पर्यवेक्षणशीलता आदि गुणों के कारण अधिकतर वर्तमान विद्वान सूर को जन्मान्ध स्वीकार नहीं करते।

श्यामसुन्दर दास ने इस सम्बन्ध में लिखा है - "सूर वास्तव में जन्मांध नहीं थे, क्योंकि शृंगार तथा रंग-रुपादि का जो वर्णन उन्होंने किया है वैसा कोई जन्मान्ध नहीं कर सकता।" डॉक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है - "सूरसागर के कुछ पदों से यह ध्वनि अवश्य निकलती है कि सूरदास अपने को जन्म का अंधा और कर्म का अभागा कहते हैं, पर सब समय इसके अक्षरार्थ को ही प्रधान नहीं मानना चाहिए।"

सूरदास जी द्वारा लिखित पाँच ग्रन्थ बताए जाते हैं:

- (1) सूरसागर - जो सूरदास की प्रसिद्ध रचना है। जिसमें सवा लाख पद संग्रहित थे। किंतु अब सात-आठ हजार पद ही मिलते हैं।

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 3, Issue 8, August 2016 |

- (2) सूरसारावली
- (3) साहित्य-लहरी - जिसमें उनके कूट पद संकलित हैं।
- (4) नल-दमयन्ती
- (5) ब्याहलो

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित पुस्तकों की विवरण तालिका में सूरदास के 16 ग्रंथों का उल्लेख है। इनमें सूरसागर, सूरसरावली, साहित्य लहरी, नल-दमयन्ती, ब्याहलो के अतिरिक्त दशमस्कंध टीका, नागलीला, भागवत्, गोवर्धन लीला, सूरपचीसी, सूरसागर सार, प्राणप्यारी, आदि ग्रंथ सम्मिलित हैं। इनमें प्रारम्भ के तीन ग्रंथ ही महत्त्वपूर्ण समझे जाते हैं, साहित्य लहरी की प्राप्त प्रति में बहुत प्रक्षिप्तांश जुड़े हुए हैं।

साहित्य लहरी, सूरसागर, सूर की सारावली।
श्रीकृष्ण जी की बाल-छवि पर लेखनी अनुपम चली।।

- सूरसागर का मुख्य वर्ण्य विषय श्री कृष्ण की लीलाओं का गान रहा है।
- सूरसारावली में कवि ने जिन कृष्ण विषयक कथात्मक और सेवा परक पदों का गान किया उन्ही के सार रूप में उन्होंने सारावली की रचना की है।
- सहित्यलहरी में सूर के दृष्टिकूट पद संकलित हैं।

- 1. सूरदास के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण के अनुग्रह से मनुष्य को सद्गति मिल सकती है। अटल भक्ति कर्मभेद, जातिभेद, ज्ञान, योग से श्रेष्ठ है।
- 2. सूर ने वात्सल्य, श्रृंगार और शांत रसों को मुख्य रूप से अपनाया है। सूर ने अपनी कल्पना और प्रतिभा के सहारे कृष्ण के बाल्य-रूप का अति सुंदर, सरस, सजीव और मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है। बालकों की चपलता, स्पर्धा, अभिलाषा, आकांक्षा का वर्णन करने में विश्व व्यापी बाल-स्वरूप का चित्रण किया है। बाल-कृष्ण की एक-एक चेष्टा के चित्रण में कवि ने कमाल की होशियारी एवं सूक्ष्म निरीक्षण का परिचय दिया है-

  मैया कबहिं बढैगी चौटी?
  किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।

  सूर के कृष्ण प्रेम और माधुर्य प्रतिमूर्ति है। जिसकी अभिव्यक्ति बड़ी ही स्वाभाविक और सजीव रूप में हुई है।

- 3. जो कोमलकांत पदावली, भावानुकूल शब्द-चयन, सार्थक अलंकार-योजना, धारावाही प्रवाह, संगीतात्मकता एवं सजीवता सूर की भाषा में है, उसे देखकर तो यही कहना पड़ता है कि सूर ने ही सर्व प्रथम ब्रजभाषा को साहित्यिक रूप दिया है।
- 4. सूर ने भक्ति के साथ श्रृंगार को जोड़कर उसके संयोग-वियोग पक्षों का जैसा वर्णन किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।
- 5. सूर ने विनय के पद भी रचे हैं, जिसमें उनकी दास्य-भावना कहीं-कहीं तुलसीदास से आगे बढ़ जाती है-
  हमारे प्रभु औगुन चित न धरौ।
  समदरसी है मान तुम्हारौ, सोई पार करौ।

- 6. सूर ने स्थान-स्थान पर कूट पद भी लिखे हैं।
- 7. प्रेम के स्वच्छ और मार्जित रूप का चित्रण भारतीय साहित्य में किसी और कवि ने नहीं किया है यह सूरदास की अपनी विशेषता है। वियोग के समय राधिका का जो चित्र सूरदास ने चित्रित किया है, वह इस प्रेम के योग्य है
- 8. सूर ने यशोदा आदि के शील, गुण आदि का सुंदर चित्रण किया है।
- 9. सूर का भ्रमरगीत वियोग-श्रृंगार का ही उत्कृष्ट ग्रंथ नहीं है, उसमें सगुण और निर्गुण का भी विवेचन हुआ है। इसमें विशेषकर उद्धव-गोपी संवादों में हास्य-व्यंग्य के अच्छे छींटें भी मिलते हैं।
- 10. सूर काव्य में प्रकृति-सौंदर्य का सूक्ष्म और सजीव वर्णन मिलता है।
- 11. सूर की कविता में पुराने आख्यानों और कथनों का उल्लेख बहुत स्थानों में मिलता है।
- 12. सूर के गेय पदों में हृदयस्थ भावों की बड़ी सुंदर व्यजना हुई है। उनके कृष्ण-लीला संबंधी पदों में सूर के भक्त और कवि हृदय की सुंदर झाँकी मिलती है।
- 13. सूर का काव्य भाव-पक्ष की दृष्टि से ही महान नहीं है, कला-पक्ष की दृष्टि से भी वह उतना ही महत्वपूर्ण है। सूर की भाषा सरल, स्वाभाविक तथा वाग्वैदिग्धपूर्ण है। अलंकार-योजना की दृष्टि से भी उनका कला-पक्ष सबल है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने सूर की कवित्व-शक्ति के बारे में लिखा है-

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 3, Issue 8, August 2016 |

सूरदास जब अपने प्रिय विषय का वर्णन शुरू करते हैं तो मानो अलंकार-शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सूरदास हिंदी साहित्य के महाकवि हैं, क्योंकि उन्होंने न केवल भाव और भाषा की दृष्टि से साहित्य को सुसज्जित किया, वरन् कृष्ण-काव्य की विशिष्ट परंपरा को भी जन्म दिया।

विचार-विमर्श

भारत के प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में बालक कृष्ण की लीलाओं के अनेक वर्णन मिलते हैं। जिनमें यशोदा को ब्रह्मांड के दर्शन, माखनचोरी और उसके आरोप में ओखल से बाँध देने की घटनाओं का सूरदास ने सजीव वर्णन किया है। इन पदों में सूर का वर्णन वात्सल्य रस की प्रतीति भक्तिरस के रूप में व्यक्त हुई है.। हिंदू धर्मग्रंथों में, यशोदा को भगवान श्रीकृष्ण की पालक-माता, नंद बाबा की पत्नी और रोहिणी की बहन कहा गया है। यशोदा एक यादवकन्या थी[1] भागवत पुराण के अनुसार, कृष्ण का जन्म देवकी के गर्भ से मथुरा के राजा कंस के कारागार में हुआ, लेकिन कृष्ण के पिता वसुदेव नवजात कृष्ण को अपने चचेरे भाई नंद बाबा के पास गोकुल में लाए, ताकि कृष्ण को मथुरा के राजा व देवकी के भाई कंस से उनकी रक्षा की जा सके। कृष्ण का पालन पोषण यशोदा ने किया। भारत के प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में बालक कृष्ण की लीलाओं के अनेक वर्णन मिलते हैं। जिनमें यशोदा को ब्रह्मांड के दर्शन[2], माखनचोरी और उसके आरोप में ओखल से बाँध देने की घटनाओं[3] का सूरदास ने सजीव वर्णन किया है[4]। इन पदों में सूर का वर्णन वात्सल्य रस की प्रतीति भक्तिरस के रूप में व्यक्त हुई है[5].। कृष्ण (/ ˈ k r ɪ ʃ n ə / ; [12] संस्कृत : कृष्ण, आईएएसटी : कृष्ण [ˈkr̥ʂɳɐ]) हिंदू धर्म मेंएक प्रमुख देवता हैं । उन्हें विष्णु केआठवें अवतार औरअपने आप में सर्वोच्च भगवान के रूप में भी पूजा जाता है। [13] वह सुरक्षा, करुणा, कोमलता और प्रेम का देवता है; [14] [1] और हिंदू धर्म के देवताओं में सबसे लोकप्रिय और व्यापक रूप से पूजनीय है। [15] कृष्ण का जन्मदिन हर साल हिंदुओं द्वारा चंद्र-सौर हिंदू कैलेंडर के अनुसार कृष्ण जन्माष्टमी पर मनाया जाता है , जो ग्रेगोरियन कैलेंडर के अगस्त के अंत या सितंबर की शुरुआत में आता है । [16] [17]

कृष्ण के जीवन के उपाख्यानों और आख्यानों को आम तौर पर कृष्ण लीला कहा जाता है । वह महाभारत , भागवत पुराण , ब्रह्म वैवर्त पुराण और भगवद गीता में एक केंद्रीय पात्र हैं , और कई हिंदू दार्शनिक , धार्मिक और पौराणिक ग्रंथों में उनका उल्लेख है। [18] वे उन्हें विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में चित्रित करते हैं: एक ईश्वर-संतान, एक मसखरा, एक आदर्श प्रेमी, एक दिव्य नायक और सार्वभौमिक सर्वोच्च प्राणी के रूप में। [19] उनकी प्रतिमा इन किंवदंतियों को दर्शाती है, और उन्हें उनके जीवन के विभिन्न चरणों में दिखाती है, जैसे कि एक शिशु मक्खन खाता है, एक युवा लड़का खेलता हैबांसुरी , राधा के साथ या महिला भक्तों से घिरा एक युवा लड़का ; या अर्जुन को सलाह देता एक मित्रवत सारथी । [20]

कृष्ण का नाम और पर्यायवाची शब्द पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व के साहित्य और पंथों में पाए गए हैं। [21] कृष्णवाद जैसी कुछ उप-परंपराओं में, कृष्ण को स्वयं भगवान (सर्वोच्च भगवान) के रूप में पूजा जाता है। ये उपपरंपराएं मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के संदर्भ में उभरीं । [22] [23] कृष्ण-संबंधित साहित्य ने भरतनाट्यम , कथकली , कुचिपुड़ी , ओडिसी और मणिपुरी नृत्य जैसी कई प्रदर्शन कलाओं को प्रेरित किया है । [24] [25] वह एक सर्व-हिन्दू देवता हैं, लेकिन कुछ स्थानों पर विशेष रूप से पूजनीय हैं, जैसे उत्तर प्रदेश में वृन्दावन , [26] गुजरात में द्वारका और जूनागढ़ ; ओडिशा में जगन्नाथ पहलू , पश्चिम बंगाल में मायापुर ; [22] [27] [28] महाराष्ट्र के पंढरपुर में विठोबा के रूप में , राजस्थान के नाथद्वारा में श्रीनाथजी के रूप में , [22] [29] उडुपी कृष्ण के रूप में । कर्नाटक , [30] तमिलनाडु में पार्थसारथी और केरल के अरनमुला में , और केरल के गुरुवायूर में गुरुवायूरप्पन । [31] 1960 के दशक से, कृष्ण की पूजा पश्चिमी दुनिया और अफ्रीका तक भी फैल गई है, जिसका मुख्य कारण इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस (इस्कॉन) का काम है। कृष्ण की परंपरा प्राचीन भारत के कई स्वतंत्र देवताओं का एक समामेलन प्रतीत होती है, जिनमें से सबसे पहले वासुदेव को प्रमाणित किया गया है । [41] वासुदेव वृष्णि जनजाति के एक नायक-देवता थे , जो वृष्णि नायकों से संबंधित थे , जिनकी पूजा 5वीं-6वीं शताब्दी ईसा पूर्व से पाणिनी के लेखन में और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से हेलियोडोरस के साथ पुरालेख में प्रमाणित है। स्तंभ . [41] एक समय में, ऐसा माना जाता है कि वृष्णियों की जनजाति यादवों/अभीरों की जनजाति के साथ मिल गई थी, जिनके अपने नायक-देवता का नाम कृष्ण था। [41] वासुदेव और कृष्ण मिलकर एक देवता बन गए, जो इसमें प्रकट होता हैमहाभारत , और उन्हें महाभारत और भगवद गीता में विष्णु के साथ पहचाना जाने लगा। [41] चौथी शताब्दी ईस्वी के आसपास, एक अन्य परंपरा, मवेशियों के रक्षक, आभीरों के गोपाल-कृष्ण का पंथ[41] कृष्ण चरित्रों में , कृष्ण का जन्म मथुरा में यादव वंश की देवकी और उनके पति वासुदेव के घर हुआ था । [111] देवकी का भाई कंस नाम का अत्याचारी था । पौराणिक किंवदंतियों के अनुसार, देवकी की शादी में, कंस को भविष्यवक्ताओं ने बताया था कि देवकी का एक बच्चा उसे मार डालेगा। कभी-कभी, इसे कंस की मृत्यु की घोषणा करने वाली आकाशवाणी के रूप में दर्शाया जाता है। कंस ने देवकी के सभी बच्चों को मारने की योजना बनाई। जब कृष्ण का जन्म होता है, तो वासुदेव गुप्त रूप से शिशु कृष्ण को यमुना पार ले जाते हैं, और उन्हें यशोदा से बदल देते हैंकी बेटी. जब कंस नवजात को मारने की कोशिश करता है, तो पुराणों की किंवदंतियों के अनुसार, बदला हुआ बच्चा हिंदू देवी योगमाया के रूप में प्रकट होता है, और उसे चेतावनी देता है कि उसकी मृत्यु उसके राज्य में आ गई है, और फिर गायब हो जाती है। कृष्ण आधुनिक मथुरा के पास नंद और उनकी पत्नी यशोदा के साथ बड़े हुए । [112] [113] [114] इन किंवदंतियों के

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 3, Issue 8, August 2016 |

अनुसार, कृष्ण के दो भाई-बहन भी जीवित हैं, अर्थात् बलराम और सुभद्रा । [115] कृष्ण के जन्म के दिन को कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है ।

परिणाम

कृष्ण के बचपन और युवावस्था की किंवदंतियाँ उन्हें एक गाय चराने वाले, एक शरारती लड़के के रूप में वर्णित करती हैं, जिनकी शरारतों के कारण उन्हें माखन चोर (मक्खन चोर) उपनाम मिलता है , और एक रक्षक जो गोकुल और वृन्दावन दोनों में लोगों का दिल चुरा लेता है। उदाहरण के लिए, ग्रंथों में कहा गया है कि कृष्ण ने वृन्दावन के निवासियों को विनाशकारी बारिश और बाढ़ से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत को उठाया था । [116]

अन्य किंवदंतियाँ उन्हें वृन्दावन की गोपियों, विशेष रूप से राधा के एक मंत्रमुग्ध और चंचल प्रेमी के रूप में वर्णित करती हैं । इन रूपकों से भरी प्रेम कहानियों को रस लीला के रूप में जाना जाता है और गीत गोविंदा के लेखक जयदेव की कविता में रोमांटिक रूप दिया गया था । वे राधा कृष्ण की पूजा करने वाली कृष्ण भक्ति परंपराओं के विकास में भी केंद्रीय हैं । [117]

कृष्ण का बचपन लीला की हिंदू अवधारणा को दर्शाता है , मनोरंजन और आनंद के लिए खेलना, न कि खेल या लाभ के लिए। रास नृत्य या रास-लीला में गोपियों के साथ उनकी बातचीत एक उदाहरण है। कृष्ण अपनी बांसुरी बजाते हैं और गोपियाँ, जो कुछ भी वे कर रही थीं, तुरंत छोड़कर, यमुना नदी के तट पर आ जाती हैं और उनके साथ गायन और नृत्य में शामिल हो जाती हैं। यहां तक कि जो लोग शारीरिक रूप से वहां मौजूद नहीं हो सकते थे वे भी ध्यान के माध्यम से उनसे जुड़ते हैं। वह अस्तित्व में आध्यात्मिक सार और प्रेम-शाश्वत है, गोपियाँ रूपक रूप से प्रकृति पदार्थ और अनित्य शरीर का प्रतिनिधित्व करती हैं। [118] : 256

यह लीला कृष्ण के बचपन और युवावस्था की किंवदंतियों में एक निरंतर विषय है। यहां तक कि जब वह दूसरों की रक्षा के लिए सांप से युद्ध कर रहा होता है, तब भी हिंदू ग्रंथों में उसका वर्णन इस तरह किया जाता है जैसे वह कोई खेल खेल रहा हो। [118] : 255 कृष्ण की चंचलता का यह गुण रास-लीला और जन्माष्टमी जैसे त्योहारों के दौरान मनाया जाता है, जहां महाराष्ट्र जैसे कुछ क्षेत्रों में हिंदू उनकी किंवदंतियों की चंचलता से नकल करते हैं, जैसे कि खुली हांडी (मिट्टी के बर्तन) को तोड़ने के लिए मानव जिमनास्टिक पिरामिड बनाना। मक्खन या छाछ को "चुराने" के लिए हवा में ऊँचा लटका दिया जाता था और उसे पूरे समूह पर फैला दिया जाता थाकृष्ण किंवदंतियों में उनकी मथुरा वापसी का वर्णन है। कंस द्वारा हत्या के कई प्रयासों को विफल करने के बाद उसने अत्याचारी राजा, अपने चाचा कंस को उखाड़ फेंका और मार डाला। वह कंस के पिता उग्रसेन को यादवों के राजा के रूप में बहाल करता है और दरबार में एक प्रमुख राजकुमार बन जाता है। [120] कृष्ण कहानी के एक संस्करण में, जैसा कि शांता राव द्वारा सुनाया गया है, कृष्ण कंस की मृत्यु के बाद यादवों को नव निर्मित शहर द्वारका में ले जाते हैं । इसके बाद पांडव उठ खड़े होते हैं। कृष्ण ने अर्जुन और कुरु साम्राज्य के अन्य पांडव राजकुमारों से मित्रता की। महाभारत में कृष्ण की मुख्य भूमिका है । [121]

भागवत पुराण में कृष्ण की आठ पत्नियों का वर्णन है जो क्रम से रुक्मिणी , सत्यभामा , जाम्बवती , कालिंदी , मित्रविंदा , नग्नजिती (जिन्हें सत्या भी कहा जाता है), भद्रा और लक्ष्मणा (जिन्हें मद्रा भी कहा जाता है) के रूप में दिखाई देती हैं। [122] डेनिस हडसन के अनुसार, यह एक रूपक है जहां आठ पत्नियों में से प्रत्येक उसके एक अलग पहलू को दर्शाती है। [123] जॉर्ज विलियम्स के अनुसार, वैष्णव ग्रंथों में सभी गोपियों को कृष्ण की पत्नियों के रूप में वर्णित किया गया है, लेकिन यह भक्ति संबंध और कृष्ण की उनके प्रति समर्पित प्रत्येक व्यक्ति के प्रति पूर्ण प्रेमपूर्ण भक्ति का आध्यात्मिक प्रतीक है।[124]

कृष्ण से संबंधित हिंदू परंपराओं में, उन्हें सबसे अधिक राधा के साथ देखा जाता है । उनकी सभी पत्नियाँ और उनकी प्रेमिका राधा को हिंदू परंपरा में विष्णु की पत्नी देवी लक्ष्मी का अवतार माना जाता है। [125] [11] गोपियों को लक्ष्मी या राधा का स्वरूप माना जाता है।

निष्कर्ष

कृष्ण की जीवन कहानी के कई संस्करण हैं, जिनमें से तीन का सबसे अधिक अध्ययन किया जाता है: हरिवंश , भागवत पुराण और विष्णु पुराण । [134] वे मूल कहानी साझा करते हैं लेकिन उनकी विशिष्टताओं, विवरणों और शैलियों में काफी भिन्नता होती है। [135] सबसे मौलिक रचना, हरिवंश को यथार्थवादी शैली में बताया गया है जो कृष्ण के जीवन को एक गरीब चरवाहे के रूप में वर्णित करता है लेकिन काव्यात्मक और मायावी कल्पना में बुना जाता है। यह कृष्ण की मृत्यु के साथ नहीं, बल्कि एक विजयी नोट पर समाप्त होता है। [136] कुछ विवरणों में भिन्नता होने पर, विष्णु पुराण की पांचवीं पुस्तक हरिवंश से दूर चली जाती हैयथार्थवाद और कृष्ण को रहस्यमय शब्दों और स्तुतियों में समाहित करता है। [137] विष्णु पुराण पांडुलिपियां कई संस्करणों में मौजूद हैं। [138]

भागवत पुराण की दसवीं और ग्यारहवीं पुस्तकों को व्यापक रूप से एक काव्यात्मक कृति माना जाता है, जो कल्पना और रूपकों से भरपूर है, जिसका हरिवंश में पाए जाने वाले देहाती जीवन के यथार्थवाद से कोई संबंध नहीं है । कृष्ण के जीवन को एक लौकिक नाटक (लीला) के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जहाँ उनकी युवावस्था को एक राजसी जीवन के रूप में प्रस्तुत किया गया है और उनके पालक पिता नंद को एक राजा के रूप में चित्रित किया गया है। [139] कृष्ण का जीवन हरिवंश में एक इंसान के जीवन के करीब

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 3, Issue 8, August 2016 |

है , लेकिन भागवत पुराण में यह एक प्रतीकात्मक ब्रह्मांड है , जहां कृष्ण हमेशा ब्रह्मांड के भीतर और उससे परे, साथ ही ब्रह्मांड में भी हैं। [140] भागवत पुराणपांडुलिपियाँ कई संस्करणों में, कई भारतीय भाषाओं में भी मौजूद हैं। [141] [87]

चैतन्य महाप्रभु को गौड़ीय वैष्णववाद और इस्कॉन समुदाय द्वारा कृष्ण का अवतार माना जाता है ।

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. आचार्य रामचंद्र, शुक्ल (१९२९). हिन्दी साहित्य का इतिहास. काशी: उमर प्रचारिणी सभा. पृ॰ १५९.
2. ↑ चन्द्रकान्ता. "Surdas (Sur Jay Shankar Prasad) - Chandrakantha". chandrakantha.com. मूल से 19 अक्तूबर 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि १० दिसम्बर २०१५.
3. ↑ "क्या रामदास बैरागी थे कृष्ण भक्त सूरदास जी के पिता?". Punjabkesari. 2021-06-13. अभिगमन तिथि 2021-06-14.
4. ↑ "सूरदास भगवान कृष्ण के बहुत बड़े भक्त थे।". पंजाब केसरी.
5. Subramaniam, Kamala. Srimad Bhagavatam. Bharatiya Vidya Bhavan, 1979. पृ॰ 320.
6. ↑ "कृष्ण और यशोदा की कथा". मूल से 14 सितंबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 मार्च 2008.
7. ↑ "ओखले से बंधे कृष्ण". मूल से 16 अक्तूबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 मार्च 2008.
8. ↑ "मातृ वचन". मूल से 9 जून 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 मार्च 2008.
9. ↑ "वात्सल्य". मूल से 9 जून 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 मार्च 2008.
10. ब्रायंट और एकस्ट्रैंड 2004, पीपी. 20-25, उद्धरण: "कृष्ण की दिव्यता के तीन आयाम (...) दिव्य महिमा और सर्वोच्चता, (...) दिव्य कोमलता और अंतरंगता, (...) करुणा और सुरक्षा। , (..., पृष्ठ 24) कृष्ण प्रेम के देवता के रूप में"।
11. ^ स्वामी शिवानंद (1964)। श्री कृष्ण . भारतीय विद्या भवन. पी। 4.
12. ^ "कृष्ण योगेश्वर" । द हिंदू । 12 सितंबर 2014.
13. ^ ब्रायंट 2007, पृ. 114.
14. ^ के. क्लॉस्टरमैयर (1997)। चार्ल्स स्ट्रॉन्ग ट्रस्ट लेक्चर्स, 1972-1984 । क्रॉट्टी, रॉबर्ट बी. ब्रिल एकेडमिक पब। पी। 109.आईएसबीएन 978-90-04-07863-5. (...) शाश्वत प्रसिद्धि प्राप्त करने के बाद, उन्होंने फिर से अपना वास्तविक स्वरूप ब्रह्म धारण कर लिया । विष्णु के अवतारों में सबसे महत्वपूर्ण निस्संदेह कृष्ण हैं, काले अवतार, जिन्हें श्यामा भी कहा जाता है । अपने उपासकों के लिए वह सामान्य अर्थों में अवतार नहीं हैं, बल्कि स्वयं भगवान हैं।
15. ^ रायचौधरी 1972 , पृ. 124
16. ^ डायना एल. एक (2012)। भारत: एक पवित्र भूगोल । सन्द्राव। पीपी. 380-381. आईएसबीएन 978-0-385-53190-0., उद्धरण: "जारा नाम के एक शिकारी के एक ही तीर से कृष्ण के पैर, हाथ और हृदय में चोट लगी थी। ऐसा कहा जाता है कि कृष्ण वहां लेटे हुए थे, और जारा ने उनके लाल पैर को हिरण समझ लिया और अपना तीर छोड़ दिया। वहां कृष्ण ने मृत।"
17. ^ नरवणे, विश्वनाथ एस. (1987)। भारतीय पौराणिक कथाओं का एक साथी: हिंदू, बौद्ध और जैन । थिंकर्स लाइब्रेरी, टेक्निकल पब्लिशिंग हाउस।
18. ^ सिन्हा, पूर्णेंदु नारायण (1950)। भागवत पुराण का एक अध्ययन: या, गूढ़ हिंदू धर्म । अलेक्जेंड्रिया की लाइब्रेरी. आईएसबीएन 978-1-4655-2506-2.
19. ^ जॉन स्ट्रैटन हॉले, डोना मैरी वुल्फ (1982)। दिव्य पत्नी: राधा और भारत की देवियाँ। मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशक। पी। 12.आईएसबीएन 978-0-89581-102-8.
20. ^ ब्रायंट 2007, पी. 443.
21. ^ "कृष्ण" । रैंडम हाउस वेबस्टर का संक्षिप्त शब्दकोश ।
22. ^ "कृष्ण" । एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका ऑनलाइन ।
23. ^ बेन-अमी शर्फस्टीन (1993)। अप्रभावीता: दर्शन और धर्म में शब्दों की विफलता । स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू यॉर्क प्रेस। पी। 166 . आईएसबीएन 978-0-7914-1347-0.
24. ^ फ़्रेडा मैचेट (2001)। कृष्ण, भगवान या अवतार? . मनोविज्ञान प्रेस. पी। 199. आईएसबीएन 978-0-7007-1281-6.
25. ^ "कृष्ण" । विश्व इतिहास विश्वकोश ।
26. ^ जेम्स जी. लोचटेफेल्ड (2002)। हिंदू धर्म का सचित्र विश्वकोश: एएम । रोसेन प्रकाशन समूह। पृ. 314-315 . आईएसबीएन 978-0-8239-3179-8.
27. ^ रिचर्ड थॉम्पसन, पीएच.डी. (दिसंबर 1994)। "धर्म और आधुनिक बुद्धिवाद के बीच संबंध पर विचार" । 4 जनवरी 2011 को मूल से संग्रहीत । 12 अप्रैल 2008 को पुनःप्राप्त .

| ISSN: 2395-7639 | www.ijmrsetm.com | Impact Factor: 7.580| A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

| Volume 3, Issue 8, August 2016 |

28. ^ महोनी, डब्ल्यूके (1987)। "कृष्ण के विभिन्न व्यक्तित्वों पर परिप्रेक्ष्य"। धर्मों का इतिहास. 26(3): 333-335. डीओआई:10.1086/463085। जेएसटीओआर1062381। एस2सीआईडी164194548। उद्धरण: "एक दिव्य नायक, आकर्षक देव बालक, लौकिक मसखरा, पूर्ण प्रेमी और सार्वभौमिक सर्वोच्च प्राणी के रूप में कृष्ण के विभिन्न रूप (...)"।
29. ^ नॉट 2000 , पीपी. 15, 36, 56